

अमड़ि साईं सनेह जी अमर कहानी सिय राघव मन भाणी ।

साईं चंद्र मुख अमड़ि चकोरी रूप सुधा पिए भाव वसि भोरी

नेह कई आ निमाणी ॥

साईं अ कथा सुख सरिता सुहाई मछुलीअ जियां अमड़ि प्रीति सुहाई

रहे रातियां द्रींह समाणी ॥

निष्ठा अमड़ि जी चात्रिक वारी दरस स्वांति जी प्यासिणि भारी

सर्वसु कयो कुलबानी ॥

साईं सुजसु आ गुलिड़ो मनोहर अमड़ि मिठी अ जो मनु आ मधुकर

थी मंकरद मंडरानी ॥

लोकोतर अनुरागु अमड़ि जो सभिनी खां जंहि जो ऊंचो दरिजो

लाती लिव लासानी ॥

रस जे राज जा ब्रई निवासी सीय रघुवर पद कंज उपासी

बृज रज जीवन जानी ॥

कोकिलि भाव में मगनु रहनि नितु पार्थिवि चंद्र जे चरणनि में चितु

हर्ष में मति हुलसानी ॥

वर जी विन्दुर में घड़ियूं घारीनि साह साह में सीय अमड़ि संभारीनि

परा प्रेम रस खानी ॥

गरीबि श्री खण्डि सत्य सहेलियूं आर्यलि अमड़ि जूं अलियूं अलबेलियूं

तत् सुख नेह लपटानी ॥